7

Xkk lDr

भारतीय संस्कृति में गाय को सम्मान का प्रतीक माना गया है। कृषि क्षेत्र में गाय का बड़ा महत्त्व है। कुछ रूप में कृषि को गौ आधारित माना गया है। मानव का गाय के साथ एक स्थापित संबंध रहा है। गाय को अन्य पशुओं की तुलना में अधिक भाव–संवेदना युक्त माना जाता है। इस पाठ में हमे ऋग्वेद में उल्लेखित गौ सूक्त का अध्ययन करेगें।

mís';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगेः

- ऋग्वेद मे गौ सूक्त का उच्चारण कर पाने में; और
- गौ सूक्त का भाव समझ पाने में ।

7.1 xkS lDr

गौ सूक्त – ऋग्वेद, मण्डल–6, 28वां सूक्त

vk xkok vXeUuqr HkæeØUlhnUrq xk"Bs j.k;URoLes A

çtkorh% iq#:ik bg L;qfjUæk; iohi#"kIk ngkuk% AA

vFk% हे मनुष्यों ! जैसे यहाँ हम लोगों के लिये किरणें प्राप्त होती हैं और शब्द तथा कल्याण को करती हैं, इन गौओं के बैठने के स्थान में प्राप्त हों और जैसे बहुत रूपवाली प्रभात वेलाएँ अत्यन्त ऐश्वर्य वान के लिये बहुत प्रजाओं वाली होवें, वैसे आप सब लोगों के लिये भी हों ।।१।।

bUæks ;Tous i`.krs p f'k{kR;qisínkfr u Lo e"kk;fr A

Hk;kHk;k jf;fenL; o/k;UufHkUus f[kY;s fu n/kkfr no;qe AA

vFk% हे मनुष्यों ! जो इन्द्र इस संसार के मध्य में विद्यारूपी धन को संवर्धन करता हुआ इकट्ठे हुए और टुकड़ों में हुए के बीच भी विद्वानों की कामना करते हुए विद्वान् को बार–बार निरन्तर धारण करता है और अपने स्वयं के ज्ञान को नहीं चुराता है और यज्ञ के करने वाले को विद्या देता है और सुखयुक्त करता है और देता है, वह ही सबको आगे बढ़ा सकता है ।। २ ।।

u rk u'kfUr u nHkkfr rLdjk ukIkekfe=k 0;fFkjk n/k"kfr A
nok'p ;kfHk;Zt r nnkfr p T;kfxÙkkfHk% Ipr xkifr% Ig AA

vFk% हे मनुष्यो ! जिन विद्याओं की वजह से यजमान विद्वानों से मिलता है और उन्हे कुछ चीजें प्रदान भी करता है तथा निरन्तर ही उन विद्याओं के साथ गौओं का स्वामी मिलता है, न इनका कोई है, शत्रु और पीड़ा भी दूर रहती है वे विद्याएँ नष्ट नहीं होती हैं तथा चोर उनका हरण भी नहीं कर सकता है, उन विद्याओं को आप लोग ब्रह्मचर्यादि से ग्रहण कीजिए ।। ३ ।।

u rk vokZ j.kqddkVk v'uqr u lL–r=eqi ;fUr rk vfHk A
m#xk;eHk;a rL; rk vuq xkok erL; fo pjfUr ;Tou% AA

vFk% हे मनुष्यो ! उन विद्याओं को रेणुकाओं के कुए के समान अन्धकार हृदयवाला, घोड़े (पशु) के समान बुद्धिहीन विषयों में आसक्त व्यक्ति प्राप्त नहीं करता है और मूढ़जन संस्कारयुक्त की रक्षा करने वाले को प्राप्त होकर उनके सन्मुख/समीप प्राप्त नहीं होते हैं, किन्तु वे बहुतों से प्रशंसनीय निडर मनुष्य के सम्मुख/समीप प्राप्त होती हैं और वे विद्यायें (ज्ञानपुंजरूप) किरणों के समान उस विद्वानों के सेवक को प्राप्त होते हुए विचारशील मनुष्य के साथ–साथ् चलती हैं तथा प्राप्त होती हैं ।। ४ ।।

fVIi.kh

xkok Hkxk xko bUæk e vPNkUxko% lkeL; çFkeL; Hk{k% A
bek ;k xko% l tuk l bUæ bPNkeh)nk euIk fpfnUæe AA

vFk% हे मनुष्यो ! जैसे गौएँ बछड़ों को दूध देती हैं, वैसे किरणों के समान जन और ऐश्वर्य की इच्छा करनेवाला उत्तम प्रकार से शिक्षित मनुष्य, वाणियों को और विद्या तथा ऐश्वर्य से युक्त सेवा करने योग्य मनुष्य मेरे लिये देवें और जो ये वाणियाँ जिसकी हैं वह विद्या और ऐश्वर्य से युक्त मुझ को शिक्षा देवे और मैं आत्मा तथा ज्ञान से भी ऐश्वर्ययुक्त मनुष्य की ही कामना करता हूँ ।।५।।

;w;a xkok en;Fkk —'k fpnJhj fpR—.kFkk lqçrhde A
Hkæ xg —.kFk Hkæokpk cgn~ o; mP;r lHkklq AA

vFk% हे विद्वान जनों ! आप लोग वाणियों को मधुर कीजिए और अमङ्गलस्वरूप और अधर्माचरण करनेवाले को नष्ट कीजिए तथा अधिक उत्तम प्रतीति कराने वाले द्वार आदि जिसमें उस कल्याण करने शुद्ध वायु जल और वृक्ष वाले गृह को कीजिए और आप्त विद्वानों से प्रकाशमान सभाओं में जो कल्याण करने वाली, सत्यभाषण से युक्त वाणियाँ हैं, उनको स्वीकार कीजिए और जो आप लोगों का बड़ा जीवन कहा जाता है, उसको कीजिए ।।६।।

çtkorh% l;ol fj'kUrh% 'k)k vi% lçik.k ficUrh% A
ek o Lru bl'kr ek?k'kl% ifj ok grh #æL; oT;k% AA

vFk% हे राजन् ! जैसे गौवों का पालन करनेवाला सुन्दर घास आदि को भक्षण करती हुई, सुन्दर जलपान के स्थान में निर्मल जलों को पीती हुई, श्रेष्ठ सन्तानवाली गौवों का पालन करता है, वैसे आप प्रजाओं का पालन कीजिए और जैसे आप प्रजा को चोर और पाप कार्य करने वालें समर्थ नहीं होने देते, वैसे आप लोगों के सम्बन्ध में रौद्र कर्म करने वाले का परिवर्जन करे ।।७।।

mi neiipuek l xk"kiiP;rke A
mi _"kHkL; jrL;iUæ ro oh;! AA

vFk% हे इन्द्र! अत्यन्त ऐश्वर्य के करने वाले, श्रेष्ठ, आपके पराक्रम में प्रजाओं के साथ सम्बन्ध कीजिए। तथा पराक्रम में आपको सम्बन्ध करना चाहिये और इन पृथिवियों वा वाणियों में समीप सम्बन्ध करना चाहिये।।८।।

पाठगत प्रश्न 7.1

(1). रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. प्रजावतीः .... इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः।
2. न ता नशन्ति न दभाति तस्करो .... व्यथिरा दधर्षति ।
3. न ता अर्वा .... अश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि ।
4. गावो भगो गाव इन्द्रो मे .... सोमस्य प्रथमस्य भक्षः ।
5. यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा .... ।

आपने क्या सीखा

- गौ सूक्त का उच्चारण।
- मनुष्य का गाय के साथ संबंध।

पाठांत प्रश्न

1. गाय का मनुष्य के साथ क्या संबंध रहा है। लिखिए।

mÙkjekyk

7.1

(1)

1. पुरुरूपा
2. नासामामित्रो
3. रेणुककाटो
4. अच्छान्गावः
5. सुप्रतीकम्